403/23/11/16

Abstract

1857 KI PRIGHATNA KA HINDI-PRADESH KE LOK SAHITYA PAR PRABHAV

PhD Thesis

By

VENKATESH KUMAR

Supervisor
Dr. K.K. Kaushik

Department of Hindi
Faculty of Humanities and Languages
Jamia Millia Islamia
New Delhi

'1857' पर केंद्रित पत्रिकाओं के विशेषांकों से गुजरते हुए मेरा ध्यान '1857' के लोकगीतों पर गया। '1857' से संबंधित लोकगीतों ने मुझे आकर्षित किया। इस संदर्भ में अपने शिक्षकों और मित्रों से बात करते हुए मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि '1857' के लोक साहित्य पर शोध करना बहुत ही दिलचस्प हो सकता है। चूंकि '1857' के केंद्र में हिन्दी-प्रदेश रहा है, इसलिए स्वाभाविक रूप से मेरे शोध का विषय बन गया - '1857' की परिघटना का हिंदी-प्रदेश के लोक साहित्य पर प्रभाव'।

हिंदी-प्रदेश अपने आप में बहुत ही विशाल क्षेत्र है। '1857' से जुड़े व्यक्तियों और घटनाओं की सूची भी बहुत लंबी है। ऐसे में यह स्वाभाविक ही है कि कुछ पहलू छूट भी जाए।

यह एक आम धारणा है कि हिन्दी-प्रदेश में '1857' के लोक साहित्य का अकूत भंडार है। लेकिन यह बात सच नहीं है। मौखिक रूप में '1857' से संबंधित बहुत ही कम लोक साहित्य मिलते हैं। दरअसल अंग्रेजों की दमन नीति का शिकार लोक साहित्य भी हुआ। '1857' के लोक साहित्य को लोक साहित्य की जान कही जाने वाली समृद्ध मौखिक परंपरा नहीं मिली। शिष्ट साहित्य में पढ़े-लिखे लेखकों ने जो 'बीच का रास्ता' निकाला था कि ऊपर और नीचे जय विक्टोरिया रानी करो और बीच में अपने मन की बात कह दो- यह रास्ता तो लोक साहित्य की रचना-प्रक्रिया के बिल्कुल प्रतिकूल है।

मैंने अपने शोध-प्रबंध को पांच अध्यायों में विभाजित किया है।

पहले अध्याय का शीर्षक है- 'आधुनिक अनुशासन के अध्ययन में लोक साहित्य की भूमिका।' इस अध्याय में लोक साहित्य के सिद्धांत-पक्ष को स्पष्ट किया गया है। इस क्रम में लोक साहित्य के संग्रह और अध्ययन की परंपरा की पड़ताल की गई है। ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों के अध्ययन में लोक साहित्य के महत्त्व को रेखांकित किया गया है। इस संदर्भ में इतिहास, समाजशास्त्र और मानवशास्त्र से लोक साहित्य के रिश्ते को भी समझने की कोशिश की गई है। इतिहास-लेखन में लोक साहित्य के प्रयोग को लेकर विशेष रूप से सतर्क रहने की जरूरत होती है। एक अच्छा इतिहासकार एक ही तरह की स्रोत-सामग्री से अपना काम नहीं चलाता। सिर्फ सरकारी-दस्तावेज या सिर्फ लोक साहित्य को आधार बनाकर श्रेष्ठ इतिहास नहीं लिखा जा सकता। श्रेष्ठ इतिहास-लेखन के लिए इन दोनों का सामंजस्य जरूरी है।

इतिहास लेखन की एक महत्त्वपूर्ण पद्धति-'निम्नवर्गीय विमर्श' में इसी तरह के सामंजस्य को संभव बनाने की कोशिश की गई है। निम्नवर्गीय विमर्श के अंतर्गत वंचित लोगों की आशा-आकांक्षा को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया जाता है।

दूसरे अध्याय का शीर्षक है - '1857' और हिंदी-प्रदेश।' इसमें हिंदी-प्रदेश की सैद्धांतिक बनावट को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।आज हम जिसे 'हिंदी-प्रदेश' कहते हैं, वह इतिहास के पन्नों में कई नामों से जाना जाता रहा है। मुस्लिम-शासनकाल में 'हिंदी-प्रदेश' हिंदुस्तान कहलाता था तथा इससे पूर्व यही प्रदेश मध्यदेश नाम से भी प्रसिद्ध था। हिंदी-प्रदेश को हिंदी-क्षेत्र या हिंदी-भाषी-क्षेत्र के नाम से भी जाना जाता है।

स्पष्ट है कि हिंदी-प्रदेश की बनावट में हिंदी भाषा की अहम भूमिका है। इसी क्रम में हिंदी प्रदेश की सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति पर भी बात की गई है। भारतीय नवजागरण पर बात करते हुए हिंदी नवजागरण की विशेषताओं को रेखांकित करने की कोशिश की गई हैं।

'1857' के केंद्र में हिंदी-प्रदेश रहा है। यह अकारण नहीं है कि रामविलास शर्मा हिंदी-प्रदेश में नवजागरण का आरंभ 1857 के स्वाधीनता संग्राम से मानते है। '1857' में पूरा हिंदी-प्रदेश एक हो गया। आज हिंदी-प्रदेश में जिस तरह की समस्याएं हैं, उनसे जूझने का रास्ता भी हमें '1857' से ही मिलेगा। इसलिए हिंदी प्रदेश के निवासियों को '1857' के बारे में जानना चाहिए और उस पर गर्व करना चाहिए।

तीसरा अध्याय ''1857' संबंधी इतिहास लेखन और लोक साहित्य' पर केंद्रित है। इस अध्याय में '1857' संबंधी इतिहास-लेखन की परख लोक साहित्य के साक्ष्यों के आधार पर की गई है। आधुनिक अनुशासन के रूप में जिस इतिहास का हमलोग अध्ययन करते हैं, उसके विकास में पुश्चिम की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। अंग्रेज इतिहासकारों ने भारतीय इतिहास को बहुत हद तक विकृत करने का भी कार्य किया। भारत में अंग्रेजी राज को सही साबित करने के चक्कर में यहां के राजा-रजवाड़े की बहुत ही क्रूर छवि बना दी गई। जो भी राजा-रजवाड़े अंग्रेजों का साथ न देते वे अंग्रेजों की नजर में क्रूर हो जाते। अंग्रेजों द्वारा लिखे इतिहास में सामान्य तौर पर कुंवर सिंह, नाना साहब, लक्ष्मीबाई, राणा बेनी माधव जैसे प्रतापी लोगों को सुविधाभोगी, चरित्रहीन और कायर बताया गया है। लेकिन लोक-स्मृति में दर्ज लोकगीतों में इन्हें नायक का दर्जा प्राप्त है।

प्रस्तुत अध्याय में लोकगीतों के माध्यम से '1857' के सेनानियों का मूल्यांकन भी किया गया है।

'1857' में हिन्दुओं और मुस्लिमों ने मिलकर अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह में भाग लिया। लोकगीतों में इस तथ्य को बड़ी ही जीवंतता के साथ प्रकट किया गया है। इस अध्याय में इस पक्ष की भी पड़ताल की गई है।

चौथे अध्याय का शीर्षक है - ''1857' में हाशिये के लोगों की भूमिका और लोक साहित्य।' इस अध्याय में '1857 में दलितों और आदिवासियों की भूमिका का मूल्यांकन किया गया है। दलितों के बारे में यह बात प्रचारित की जाती है कि अंग्रेजों का भारत में बने रहना उनके हित में था, इसलिए वे अंग्रेजों का विरोध नहीं करते। लेकिन सचाई यह है कि '1857' में दलितों के एक बड़े वर्ग ने अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी। अंग्रेजों द्वारा विद्रोहियों को दी गई फांसी की सूची में कई दलितों की मौजूदगी ही अपने आप में बहुत कुछ बयां कर देती है। अंग्रेज जब गांवों को आग के हवाले करते थे तो वे यह नहीं देखते थे कि इसमें किसी दलित का घर तो नहीं जल रहा। यह अकारण नहीं है कि कई दलित लेखक मतादीन को '1857' के प्रणेता के रूप में चित्रित करते हैं। 1857 के विद्रोह में दलितों की भागीदारी उनके लिए किस तरह से गर्व की बात है, इसका अंदाजा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि दलित नेत्री मायावती खुद को झलकारी बाई से जोड़ते हुए गर्व की अनुभूति करती हैं। प्रस्तुत अध्याय में इन सारे पक्षों की पड़ताल की गई है।

पांचवे अध्याय का शीर्षक है - 'राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन पर '1857' का प्रभाव।' इस अध्याय में यह दिखाया गया है कि '1857' से राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन का गहरा रिश्ता है। इस क्रम में 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' की स्थापना के कारणों की पड़ताल की गई है। यदि हम यह मान लें कि '1857' की असफलता भारत को प्रगति के रास्ते पर ले गई तो फिर इतना बड़ा स्वतंत्रता आंदोलन क्यों हुआ! आखिर 1910 ई॰ में भी किसी अखबार में लक्ष्मीबाई की तस्वीर छापने के कारण उसके संपादक पर अंग्रेजों द्वारा राजद्रोह का मुकदमा दर्ज करके उसे जेल में क्यों डाल दिया जाता है! आखिर क्यों '1857' में हिंदुओं-मुसलमानों की एकता अंग्रेजों को बर्दाश्त नहीं हुई और वे आगे चलकर लगातार इनके बीच फूट डालने की कोशिश करते रहे!

प्रस्तुत अध्याय में गदर पार्टी की स्थापना का '1857 से जो संबंध रहा, उसे भी विश्लेषित किया गया है। विदेशों में रह रहे कुछ भारतीय क्रांतिकारी जिस तरह '1857' से प्रेरणा लेकर अंग्रेज-मुक्त भारत बनाने की प्रतिज्ञा करते हैं, वह '1857' की वास्तविक प्रकृति को समझने में सहायक है। इसी संदर्भ में भगत सिंह और चंद्रशेखर आजाद जैसे क्रांतिकारियों के बलिदान को भी हम समझ पाते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में भारतीय स्वाधीनता के केंद्र में महात्मा गांधी का उदय जैसी घटना को भी समझने की कोशिश की गई है। इस क्रम में महात्मा गांधी जवाहर लाल नेहरू, सुभाष चंद्र बोस, भगत सिंह आदि स्वतंत्रता सेनानियों पर जो लोकगीत रचे गये हैं, उसके आधार पर यह मान्यता स्थापित करने का प्रयास किया गया है कि '1857' की परंपरा में ही हमारा राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन भी था। इन दोनों को अलग करके इनके बारे में सही समझ विकसित नहीं की जा सकती।